हिंदी की नवगीत परंपरा का वैशिष्ट्य

प्रो. चंद्रकांत सिंह
प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,धर्मशाला
धौलाधार परिसर-एक, धर्मशाला,जिला-काँगड़ा
हि.प्र.- 176215 दूरभाष न.- 9805792455 एवं 8219939068

शोध-सार- हिंदी गीत-परम्परा का व्यवस्थित इतिहास रहा है, इसे सुदृढ़ आधार देने का कार्य हिंदी के प्रख्यात कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला को जाता है | उन्होंने हिंदी के गीति-काव्य को व्यवस्थित रूप प्रदान किया | कालान्तर में उनके द्वारा प्रवर्तित इस काव्य-धारा में स्वतंत्रता के बाद महत्वपूर्ण बदलाव घटित हुए | इस काव्य-धारा ने लय, तुक एवं गेयता को बचाए रखने के साथ आम आदमी की पीड़ा एवं यंत्रणा को खुलकर अभिव्यक्ति देनी चाही | हिंदी की नवगीत परम्परा ने सामाजिक-राजनीतिक चिंता-दशा को भी गीत की शक्ल में ढालने का प्रयास किया | प्रस्तुत आलेख में हिंदी की इस नव-गीत परम्परा को समग्रता में देखने का प्रयास किया गया है | यही नहीं मानव-मन की बुनियादी छवियों को इस गीत-परंपरा ने आकुल रूप से उभारा है जिसे इस आलेख में देखने का प्रयास हुआ है |

बीज शब्द- प्रकृति, गाँव-शहर, लोक-संस्कृति, राग-रँग,उमंग-उछाह, टीस,व्यथा

गीतों में मानव-मन की कोमल अनुभूतियाँ रूपायित होती हैं | अपने राग और हर्ष के लिए मनुष्य ने गीत विधा को सर्वाधिक उपयोगी माना | इस विधा के माध्यम से रोमांस, मस्ती आह्लादकता एवं प्रकृति के प्रति लगाव का प्रकटीकरण हुआ | मनुष्य ने गीतों को सहचर के रूप में निजी सुख-दुःख का माध्यम बनाया, यही कारण है कि गीतों में विराट संवेदनात्मक भूमि का दर्शन होता है | कविता जहाँ तिक्त-कटु यथार्थ की संवाहिका बनी, वहीं गीत मानव-मन की आतंरिक अवस्थाओं के सूचक सिद्ध हुए | हालांकि बाद में गीतों में उत्तरोत्तर क्षीणता दिखती है और एक समय के बाद हिंदी जगत की महान परम्परा हाशिए पर चली गयी | किन्तु इतना अवश्य है कि गीतों की महान परंपरा को ध्वनि एवं शब्द-रूप देने में छायावाद की महती भूमिका रही | निसर्ग के प्रति आग्रह, भावनाओं की स्पर्शकारी भूमिका एवं एकान्तिक रूप-रचना आदि ने छायावाद को गीतों के लिए सर्वथा उपयोगी सिद्ध किया | प्रगीतात्मकता, लयात्मकता, संगीतात्मकता आदि ने छायावाद की कविताओं एवं गीतों दोनों को ही नव्यता प्रदान की | महादेवी, निराला, प्रसाद के गीतों में मनुष्य के प्रणय-राग के साथ जीवन का श्रृंगार अभिव्यक्त हुआ | इन गीतों में जीवन की छाप है, इन गीतों को जीवन-धर्मी गीत कह सकते हैं | निराला के गीतों में भावात्मक कोमलता के साथ धरती के प्रति गहरी आसक्ति है, इस कारण गीत धरती से कटे हुए नहीं हैं प्रत्युत कहीं गहरे जीवन-उत्सव की कथा जान पड़ते हैं | जीवन का ताप पूरेपन के साथ निराला के गीतों में निबद्ध हुआ है | आलोचकों ने निराला को खड़ी बोली की गीत परंपरा का जनक माना है | गीतों की रचना में भाव-संवेदना के निरूपण के साथ जिस गेयता एवं संगीतात्मकता की आवश्यकता पड़ती है, वह निराला के यहाँ व्यवस्थित जान पड़ती है | डॉ. रामविलास शर्मा जी निराला के गीतों के संदर्भ में स्पष्टतः कहते हैं कि- "खड़ी बोली में उच्चारण-संगीत के भीतर से जीवन की प्रतिष्ठा निराला के गीतों की यह विशेषता है।"

स्वयं निराला ने अपनी बातचीत में कई बार इस ओर उल्लिखित किया है कि उनके लिखे गीत ब्रजभाषा के कलावन्तों एवं गीतकारों के लिए चुनौती पेश करते हैं | निराला द्वारा लिखे गीतों में हिंदी की प्रारम्भिक गीत-परम्परा, तुक विधान, छंद विधान की सिद्धता दिखती है, गीत केवल मनोरंजन के साधन मात्र नहीं हैं बल्कि इनके पाठ द्वारा संगीत एवं जीवन की गहरी समझ अर्जित की जा सकती है | निराला के गीतों में हर्ष और विषाद की छायाएँ हैं जिन्हें वह अपने गीतों में गहरे टहकार रंगों के साथ रचते जान पड़ते हैं | 'सखि बसंत आया' नामक गीत इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इस गीत में समग्र धरती का उछाह तरंगायित होकर प्रकट हुआ है | बसंत के आने पर पूरी जगती में उमंग-उल्लास की जो छायाएँ उभरती हैं, उन्हें निराला ने इस गीत के द्वारा भास्वर स्वर दिया है | निराला जीवन के प्रति आशान्वित होकर कहते हैं-

सखि वसंत आया ।
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया।
आवृत सरसी-उर-सरसिज उठे,
केसर के केश कली से छूटे,
स्वर्ण-शस्य-अंचल
पृथ्वी का लहराया।

'स्नेह निर्झर बह गया है' नामक गीत में निराला के तल्ख़ अनुभव व्यक्त हुये हैं | कवि ने इस गीत में हारेपन, अवशता आदि के साथ गहन जीवन-दर्शन को प्रकट किया है | जीवन के उत्थान-पतन, हार-जीत, सुख-दुःख की समग्र व्याख्या निराला के गीतों में दिखती है | सही अर्थों में कहें तो जीवन के जटिल यथार्थ को व्यक्त करने के कारण निराला हिंदी हिंदी गीतों के बड़े कवि रूप में उभरते हैं जो न केवल गीतों की रचना करते हैं अपितु आने वाले कवियों के लिये दिशा-मार्ग का निर्धारण भी करते हैं | देखने योग्य है 'स्नेह निर्झर बह गया है' गीत की मर्मस्पर्शी पंक्तियाँ जहाँ जीवन का विस्तीर्ण अनुभव है-

स्नेह निर्झर बह गया है
रेत ज्यों तन रह गया है।
आम की यह डाल जो सूखी दिखी,
कह रही है- अब यहाँ पिक या शिखी,
नहीं आते, पंक्ति मैं वह हूँ लिखी,
नहीं जिसका अर्थ-
जीवन दह गया है ।

छायावाद के बाद हिंदी गीतों की महाधारा संकरी और क्षीण होती चली गयी | आलोचकों ने पाँचवें दशक को हिंदी नवगीत के उत्स के रूप में देखा | इस काल को अपनी दूरदर्शिता एवं साहित्यिक सूझबूझ से निराला ने पुनः गहरे प्रभावित किया | इसलिए आलोचकों का एक वर्ग निराला को ही नवगीत का भी प्रवर्तक मानता है | शंभुनाथ सिंह जो नवगीत परंपरा के चितेरे कवि-आलोचक हैं, निराला के गीतों की जीवंतता के सन्दर्भ में कहते हैं कि- " निराला असामान्य कवि थे। उनकी प्रतिभा देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण करके काव्य-विषय और काव्य-शिल्प का संस्पर्श करती थी। आंचलिकता-बोध, युगीन- समाज से संपृक्ति और सामाजिक जीवन की विषमताओं के प्रति आक्रामक दृष्टि का प्रारंभ हिंदी कविता में सर्वप्रथम निराला में

ही दिखाई पड़ता है। इनको ही नवगीत का मूल- तत्व कहा जा सकता है, अतः सही अर्थ में निराला ही नवगीत के प्रवर्तक हैं।"

कवि ठाकुर प्रसाद सिंह हिंदी नवगीत परंपरा के आरम्भ से जुड़े हुए रचनाकार हैं | हिंदी नवगीत परंपरा ने जीवन के जिस कटु यथार्थ को गहरी वाणी प्रदान की, उसे ठाकुर प्रसाद सिंह ने पूरी ईमानदारी के साथ अपने गीतों में प्रकट किया है | उनके नवगीत इस मायने में विशेष हैं कि इनमें लोक एवं जनता का साहचर्य है | व्यक्ति मन निसर्ग के विराट-मन से जुड़ता हुआ यहाँ दिखता है | इसलिए आंचलिकता, ग्राम्यता एवं शहरीकरण की ऊब उनके गीतों की विशिष्टता है | 'शीशे के नगर में' कवि ने भौतिक ऊहापोह को दर्शाया है, जहाँ संवेदनाएँ आहत होती हैं और मानव-मन कंपकपाता है-

नगर में आ गए
शीशे के नगर में
लगे शीशे गली में
हर मोड़ पर
हर घर-डगर में
देखते हो, देखते ही रहो
कहो सब कुछ कहो
कुछ मत कहो
सहो, केवल सहो, सहते रहो,
आ गए तो चुप रहो, बैठो
न घोलो मधु ज़हर में।
नगर में आ गए
शीशे के नगर में।

उमाकांत मालवीय के गीतों में परिवर्तित संबंधों की स्थितियाँ, कटु यथार्थ एवं जीवन का विषम पथ दिखता है | 'चुभन और दंश' गीत में कवि ने विनोदी ढंग से जीवन की चुभन को दर्शाया है | इस गीत में संबंधों के दुराव-छिपाव के साथ मनुष्य की आत्मकेंद्रित एप्रोच दिखती है | नवगीत कवि के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम भर नहीं हैं बल्कि जीवन-अनुभव की टीस एवं व्यथा को विस्तार से कहने के सुंदर ढंग हैं जिन्हें कवि ने जब -तब प्रकट करना चाहा है | पैने एवं गहरे यथार्थ पर बात करते हुए वह कहते हैं-

एक चाय की चुस्की, एक कहकहा
अपना तो इतना सामान ही रहा।

चुभन और दंशन पैने यथार्थ के
पग-पग पर घेर रहे प्रेत स्वार्थ के
भीतर ही भीतर मैं बहुत ही दहा
किंतु कभी भूले से कुछ नहीं कहा
एक चाय की चुस्की, एक कहकहा ।

देवेंद्र कुमार सातवें दशक के नवगीतकारों में अग्रगण्य हैं | आपके गीतों में शहरीकरण-नगरीकरण की आपाधापी के बीच सिसकती हुई ग्राम्य कथा है | परिवर्तित होते हुए गाँवों की सच्ची, टटकी तस्वीर यदि कहीं देखनी हो तो देवेन्द्र कुमार के गीतों में देख सकते हैं | कवि के गीतों में गाँव की अबोध छवियाँ हैं किन्तु इसके साथ शहरी अभिजात्यता एवं आधुनिकता -बोध भी उनके गीतों में मुखर हैं | देवेंद्र कुमार ने बड़ी सादगी के साथ जीवन की स्थितियों और दशाओं की अभिव्यंजना की है | देवेंद्र कुमार के गीतों के संदर्भ में शम्भुनाथ सिंह जी लिखते हैं कि- " देवेंद्र कुमार के गीतों में आधुनिकता- बोध और आंचलिक अनुभूतियों का सुंदर सामंजस्य हुआ है। अनुभूति के तीखेपन ने इनकी अभिव्यंजना को बांकपन प्रदान किया है। इसी कारण इनके गीतों का अलग स्वर है, जो इन्हें अन्य नवगीतकारों से अलग करता है।"

'हम ठहरे गाँव के' नामक नवगीत में देवेन्द्र कुमार ने ग्रामीण सद्भाव को चित्रित किया है | शहरी प्रभाव के कारण एकाकीपन, भेदभाव, रिक्तता किस कदर को मानस को शून्य करती हैं यह उनके इस गीत में आसानी से देख सकते हैं | शहरीकरण की अहमन्यता के साथ इस गीत में गाँव की सामूहिकता, सहजीविता आदि दिखाई पड़ती है जो इसे बड़ा बनाती है-

हम ठहरे गाँव के
बोझ हुए रिश्ते सब
कंधों के, पाँव के।

भेद-भाव, सन्नाटा,
यह साही का काँटा,
सीने के घाव हुए,
सिलसिले अभाव के ।

सुनती हो तुम रूबी,
एक नाव फिर डूबी,
ढूँढ़ लिये नदियों ने
रास्ते बचाव के !

सातवें दशक के कवि नईम के गीत इस मायने में विशेष हैं कि इन गीतों में बुंदेलखंड की प्रकृति का सुंदर वर्णन हुआ है | नईम के गीतों में लोक -परंपरा, संस्कृति एवं बुंदेलखंड की आत्मा परिलक्षित होती है | नईम ने पूरी त्वरा से बुंदेलखंड के बिंब अपनी कविता में उकेरे हैं | शम्भु नाथ जी नईम के गीतों के संदर्भ में कहते हैं कि - " नईम के गीतों में बुंदेलखंड का आंचलिक सौंदर्य पूरे उभार के साथ दिखाई देता है। बुंदेलखंड के प्राकृतिक परिवेश एवं सांस्कृतिक परंपरा ने नईम के कवि को एक अनोखा टटकापन और खूबसूरत खुरदरापन प्रदान किया है। अपने इस निराले तेवर के कारण नईम ने अपने गीतों में बुंदेलखंड ही नहीं, समूचे मध्यप्रदेश के जीवन की तरह- तरह की मूरतें गढ़ी हैं। ये मूरतें ही नईम के गीत हैं- ताजे, टटके और जीवंत नवगीत।"'दाग़ नहीं छूटे' नामक गीत में नईम ने निजी दुःख को अभिव्यक्ति देने के साथ मध्यप्रदेश की धरोहर एवं कला-साहित्य आदि को भी निरुपित किया है | उनका यह नवगीत केवल निजी पीड़ा का रूप भर नहीं है बल्कि इस गीत में विपुलता के साथ जीवन का घनत्व है | उनके गीतों की बड़ी विशिष्टता यह है कि इनमें भावनाओं की एक रेख नहीं है अपितु कई-कई स्वर इनमें मिले हुए हैं जो संदर्शों को बड़ा बनाते हैं | नईम ने अपने इस गीत में जीवन की आलोचना की है | एक सजग व्याख्याता की तरह वह घटना, दृश्य एवं प्रसंगों की थाह लेते हैं, अपनी रचना में टहकार रंगों में उसे रचते हैं-

दामन को मल-मल कर धोया,
दाग़ नहीं छूटे।
बड़ी पुण्य-भागा है शिप्रा।
कालिदास के मेघदूत-सा डूबा, उतराया
ठहरा, मँडराया।
काट रहा हूँ अपना बोया
कर्म किसे फूटे।

आज उम्र के विकट मोड़ पर
औंधे किसी कूप में जैसे राह नहीं दिखती
थाह नहीं दिखती।

जी भरकर रोया/नाग नहीं छूटे।

'उद्भ्रांत' के गीतों में ऋतु-वर्णन और प्रकृति की मनोहारी छंटा के दर्शन होते हैं | 'मोरपंखी' नामक गीत में उदभ्रांत ने बोझिल प्रश्नों का प्रत्युत्तर प्रकृति के माध्यम से देना चाहा है | उनका यह नवगीत स्याह, अँधेरे से भरे हुए जगत की थाह लेता है | इस गीत में मानव स्थितियों की व्याख्या तो है ही साथ ही प्रकृति के साथ जुड़ने का बोध भी है | 'उद्भ्रांत' जी रिश्तों की सड़ांध, शुष्कता एवं निर्जीवता आदि को प्रकृति के साथ जोड़कर देखते हैं-

फैलाया विषधर ने जाल मोरपंखी
चंदन की देह को सम्हाल मोरपंखी !

घुमड़ रहे हैं काले आवर्तों में
बोझिल प्रश्नचिन्ह
टकराते हैं आपस में सबके
दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न
सदियों के बाद आज
ले बैठा है करवट काल मोरपंखी
चंदन की देह को सम्हाल मोरपंखी !
छाया है कुहरा, अब नहीं नज़र
आती है कहीं धूप
लगता जैसे नभ के प्रांगण में
उग आया अंध-कूप
मरकर बिजली मन की
ज़ोर से अस्तित्व निज उछाल मोरपंखी
चंदन की देह को सम्हाल मोरपंखी !

आठवें दशक के नवगीत सामाजिक-राजनीतिक दुरावस्था को चित्रित करते हैं | देश में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी एवं राजनीतिक आक्रोश को इस दशक के गीतों ने दर्शाया है | तद्युगीन नवगीत-परम्परा पर बात करते हुए शम्भुनाथ सिंह ने सही कहा है कि- "आठवें दशक की भारतीय परिस्थितियों ने नवगीत को पुनः नयी दिशा में मुड़ने के लिए विवश किया। यह दशक भारतीय राजनीति में उथल-पुथल और जनक्रांति का काल था। इस काल में शासन के सत्ताधारियों के विरुद्ध सामान्य जनता में आक्रोश और विद्रोह की भावना उत्पन्न हुई। क्योंकि शासकों ने देश को गरीबी की ओर बढ़ाया था। बेरोजगारी और महंगाई के कारण जीवन दूभर हो गया था। ऐसा लगने लगा था कि इस दुर्व्यवस्था से मुक्ति का कोई उपाय नहीं है।"

नरेश सक्सेना आठवें-नवें दशक के सक्रिय गीतकार हैं | आपने अपने गीतों के द्वारा समकालीन समस्याओं को उठाया है | आपके कृतित्व में निम्न मध्यवर्गीय जीवन बिखरी छवियाँ हैं | व्यक्ति, प्रकृति, आस-पास के प्रकीर्णित जीवन आदि को गीत के साँचे में आपने ढाला है | मन की उन्मन अवस्था के साथ प्रेम का सम्मोहन, मन का सौंदर्य आपके गीतों में झलक कर उभरा है | मन के सजीले रूप की झाँकी आपके यहाँ मिलती है जो गीतों को इन्द्रधनुषीय रंग देती है | इन गीतों को जगी आँखों से देखे हुए सपने कहा जा सकता है जिन्हें कवि अपलक देखते हैं और रीझ उठते हैं | एक तरह से कह सकते हैं कि उनके गीत मन की हसीन कोठरी में पल रही खुशनुमा उम्मीद हैं, जो गहन हताशा के क्षणों में भी जीवन को उदासी में गर्क नहीं होने देते | एक सुखद के एहसास के साथ जीवन को जीने, आकंठ सौंदर्य में डूबने की चाह यहाँ दिखती है | रूप की इसी घनी चाह की आस में कवि नरेश सक्सेना कहते हैं-

दिन भर की अलसाई बाहों का मौन,
बाहों में भर-भर कर तोड़ेगा कौन,
बेला जब भली लगेगी।
आज चली पुरवा, कल डूबेंगे ताल,
द्वारे पर सहजन की फूलेगी डाल,
ऊंची हर डाल को झुकायेगा कौन
चौथे दिन फैली लगेगी।

दिन-दिन भर अनदेखा,अनबोली रात
आंखों के सूने से बरजोरी बात,
साँझ गए साँकल खनकायेगा कौन,
कितनी बेकली लगेगी।

हिंदी नवगीतों के संदर्भ में कह सकते हैं कि इनमें जीवन के राग-रंग, उमंग-उछाह, नेह-छोह आदि का मार्मिक अंकन है | उद्दाम आकर्षण एवं रूप-माधुरी में भीगे हुए ये गीत निजता की परिसीमा से होते हुए असीम धरातल का स्पर्श करते हैं | धूल-धूसरित जीवन को रचने के साथ ये गीत धरती के भदेसपन को भी जुबाँ देते हैं | एक गहरे अर्थ में इन गीतों में जीवन का वैविध्य है | जीवन को समझते हुए, जीवन में डूबते हुए इन गीतों ने जीवन को बचाया है | प्रकृति के नैकट्य के साथ मानुष-गंध की अभिरक्षा इन गीतों का मूल ध्येय है | राजनीति का गहरा दंश गीतों के सुनहले दृश्य को तनिक भी हल्का नहीं कर पाता | कारण स्पष्ट है गीतों का धरती से गहरे जुड़ा होना | धरती से गीतों का जुड़ाव ही इन्हें बड़ा एवं अर्थकारी बनाता है | जब भी संदर्श बदलेंगे और जटिल यथार्थ के बीच मानव-जीवन बेरंग, हताश होगा | नवगीतों की सुंदर छवियाँ मनुष्य को आशान्वित करेंगी, उसके रास्ते को प्रशस्त करेंगी ताकि उसे सुकूँ मिल सके और वह प्रकृतस्थ होकर अपने दायित्वों को पूरा कर सके |

****

संदर्भ :-

1.संध्या सिंह, 'निराला का गीत-काव्य',पृष्ठ संख्या- 23
2.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-85
3.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-84
4.शम्भुनाथ सिंह (संपादक), 'नवगीत सप्तक',पृष्ठ संख्या-119
5.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-190
6.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-247
7.शम्भुनाथ सिंह (संपादक), 'नवगीत सप्तक',पृष्ठ संख्या-116
8.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-362
9.शम्भुनाथ सिंह (संपादक), 'नवगीत सप्तक',पृष्ठ संख्या-117
10.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-319
11.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-390
12.शम्भुनाथ सिंह (संपादक), 'नवगीत सप्तक',पृष्ठ संख्या-21
13.कन्हैया लाल नंदन (भूमिका, चयन एवं संपादन), 'श्रेष्ठ हिंदी गीत संचयन', पृष्ठ संख्या-352